International Journal Of Advances In
ENGINEERING, SCIENCE, COMMERCE, MANAGEMENT AND LAW

International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management, and Law
ISSN : 3048-8427 (Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed, Refereed Open Access Journal)

Original Article

"मंजूषा कला : अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपरा और धरोहर"

आनंद विजय
सहायक प्राध्यापक
रहमानी बी.एड. महाविद्यालय, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर
Resource Person of performing Arts (Drama) ,
"SCERT" Patna
(शोधार्थी प. सं. 23VU4939)
विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालिया, मध्य प्रदेश

सारांश

अंग क्षेत्र, जिसमें वर्तमान बिहार के मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया, बांका और अन्य कई जिले शामिल हैं, जितना प्राचीन है, उतनी ही प्राचीन इसकी लोक कला की परंपरा भी है। इस क्षेत्र की लोक कलाओं में विविधता और समृद्धि का अद्भुत संगम देखने को मिलता है, जिसमें लोक नाटक, लोक चित्रकला, लोक मूर्तिकला, लोक धातुकला, लोक गाथा, लोक गीत, लोक कथा, लोक कहानी और लोकोक्तियों जैसी विविध विधाएँ सम्मिलित हैं। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अंग क्षेत्र की लोक चित्रकला को केंद्र में रखते हुए उसके महत्व और वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया है। यह एक गुणात्मक शोध है, जिसमें श्रृंखलाबद्ध पद्धति के माध्यम से लोक कलाकारों के साक्षात्कार और खुली बातचीत से जानकारी संकलित की गई है। शोध क्षेत्र के रूप में मुंगेर जिले का चयन किया गया है।

कुंजी शब्द : अंग क्षेत्र, लोक चित्रकला, मंजूषा कला, मुंगेर

परिचय

अंग क्षेत्र, भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक मानचित्र पर एक विशिष्ट स्थान रखता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र महाभारतकालीन अंग राज्य के रूप में प्रसिद्ध रहा है, जिसकी राजधानी चंपा नगरी (वर्तमान भागलपुर के समीप) मानी जाती है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही व्यापार, शिक्षा, कला और संस्कृति का केंद्र रहा है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति, गंगा और कोसी जैसी नदियों की उपस्थिति तथा उपजाऊ भूमि ने इसे आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बनाया।

वर्तमान में अंग क्षेत्र में बिहार के मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया, बांका, जमुई, लखीसराय और आस-पास के अन्य जिले सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र न केवल अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए, बल्कि अपनी समृद्ध और बहुरंगी लोक कलाओं के लिए भी प्रसिद्ध है। अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर में लोक चित्रकला, विशेषकर मंजूषा कला का विशेष स्थान है।

मंजूषा चित्रकला लोकजीवन की संवेदनाओं, विश्वासों, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। इनकी प्रस्तुति प्रायः उत्सवों, मेलों, धार्मिक अनुष्ठानों और सामुदायिक अवसरों पर होती है, जिससे ये न केवल सजावट का माध्यम बनती हैं, बल्कि सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक एकता के सेतु का कार्य भी करती हैं। मंजूषा चित्रकला के माध्यम से बिहुला विषहरी लोक गाथा की संपूर्ण कथा को समझा जा सकता है। इन चित्रों में पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और लोक-गाथाओं का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। हालांकि अंग क्षेत्र का अपेक्षाकृत कम विकसित होना इसकी कलात्मक समृद्धि के व्यापक प्रचार-प्रसार में बाधा रहा है, फिर भी यहाँ के लोक पर्व, विशेषकर "बिहुला विषहरी लोक पर्व", इसकी सांस्कृतिक आत्मा को जीवित रखते हैं। इसके अतिरिक्त, अन्य पूजा अनुष्ठानों और धार्मिक अवसरों में भी मंजूषा चित्रकला का प्रयोग होता है, जो इसे स्थानीय जीवन और धार्मिक संवेदनाओं से घनिष्ठ रूप से जोड़ता है।

बिहुला विषहरी लोक कथा

कथा का अंग देश के एक प्रसिद्ध और सम्पन्न व्यापारी चांद सौदागर से होता है। चांद सौदागर धन-दौलत में अपार संपन्न थे, उनके पास किसी वस्तु की कमी नहीं थी। लेकिन उनका एक बड़ा दोष यह था कि वे देवी मनसा (विषहरी) की पूजा नहीं करते थे। मनसा देवी सर्पों की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। सौदागर की इस उपेक्षा से देवी रुष्ट हो गईं और उन्होंने उसे दंडित करने का संकल्प लिया।

चांद सौदागर के सात पुत्र थे। देवी मनसा के कोप से एक-एक कर सभी पुत्र नष्ट हो गए। अंततः सबसे छोटा बेटा लखिंदर शेष रह गया। उसका विवाह एक साहसी, सुदर्शना और धर्मपरायण कन्या बिहुला से हुआ। विवाह के अगले ही दिन मनसा देवी ने अपने दूत के रूप में नाग भेजा, जिसने लखिंदर को डस लिया और उसकी मृत्यु हो गई।

पति की मृत्यु ने बिहुला को भीतर तक झकझोर दिया, किंतु उसने हार मानने से इनकार कर दिया। उसने ठान लिया कि वह अपने पति को जीवित करवा कर ही लौटेगी। बिहुला ने लखिंदर की देह को नौका पर रखा और गंगा की धारा में निकल पड़ी। वह धूप-बारिश, तूफानों और लहरों से जूझती रही, रास्ते की कठिनाइयों को पार करती रही, किंतु अपने संकल्प से कभी विचलित नहीं हुई। वह एक-एक नगर और देवालय तक जाती रही, देवताओं और देवी-देवियों से प्रार्थना करती रही, अपने साहस और भक्ति से सभी को प्रभावित करती रही।

अंततः उसकी दृढ़ निष्ठा और अटूट प्रेम ने देवी मनसा का हृदय भी पिघला दिया। देवी ने उसे वरदान दिया और लखिंदर को पुनः जीवन प्रदान कर दिया। इस प्रकार बिहुला अपने पति को जीवित लेकर अपने गांव लौटी। उसकी यह यात्रा केवल व्यक्तिगत प्रेम और समर्पण की कहानी नहीं रही, बल्कि यह कथा स्त्री–साहस, भक्ति और नारी की अडिग शक्ति का प्रतीक बन गई।

बिहुला विषहरी लोक पर्व

अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहरों में से एक प्रमुख उत्सव बिहुला विषहरी लोक पर्व है, जो प्रतिवर्ष 17 से 19 अगस्त के बीच भक्ति, श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व अंग क्षेत्र की लोक आस्था, लोक परंपरा और नारी–साहस की अमर गाथा का जीवंत स्मरण है। इसकी जड़ें सीधे-सीधे बिहुला विषहरी लोक कथा से जुड़ी हुई हैं।

इस पर्व का सबसे प्रमुख केंद्र प्राचीन चंपा नगर (वर्तमान भागलपुर का नाथनगर) है, जहाँ देवी विषहरी का विशाल मंदिर स्थित है। इसी स्थान को इस लोक परंपरा का मुख्य तीर्थ माना जाता है।

पर्व की शुरुआत 16 अगस्त की रात से होती है। इस दिन मंजूषा (अंग क्षेत्र की विशिष्ट लोक चित्रकला) घर-घर लाई जाती है और बिहुला विषहरी की कथा का आरंभ होता है। इसके साथ ही टुंडी राक्षस, चांद सौदागर, बाला लखिंदर और बिहुला की प्रतिमाएँ भी बनाई जाती हैं।

17 अगस्त की सुबह देवी को डाला चढ़ाने की परंपरा है। इसमें एक नई टोकरी में पाँच प्रकार के फल, बिंदी, सिंदूर, लाल कपड़ा, पान, सुपारी और साड़ी अर्पित की जाती है। इस पूरे अनुष्ठान में पुरुष सहभागी को भक्त और स्त्री सहभागी को भक्तिन कहा जाता है।

उसी रात बिहुला और बाला लखिंदर का विवाह रचाया जाता है। मध्यरात्रि के बाद एक प्रतीकात्मक अनुष्ठान होता है, जिसमें लखिंदर को बिहुला की गोद में रख दिया जाता है। यह दृश्य उस अमर लोक गाथा की पुनर्रचना है जिसमें नारी की शक्ति और समर्पण मृत्यु पर विजय प्राप्त करती है।

पूरे अनुष्ठान और रात भर चलने वाले समारोह के दौरान बिहुला विषहरी की गाथा का गायन किया जाता है। इस गायन में अंग क्षेत्र की लोक-संगीत परंपरा की आत्मा बसती है। ढोल इसका सबसे प्रमुख वाद्य यंत्र है, जिसकी थाप पर पूरा समुदाय कथा के साथ एकाकार होता है।

17 अगस्त की रात इन क्षेत्रों में एक भव्य मेला लगता है। श्रद्धालु दूर-दूर से आकर देवी की पूजा-अर्चना में शामिल होते हैं और लोक गाथा, गीत-संगीत तथा मेलों के वातावरण में डूब जाते हैं। अंततः 18 अगस्त को सभी प्रतिमाओं का विसर्जन कर दिया जाता है और इसी के साथ यह लोक पर्व पूर्ण होता है।

मंजूषा चित्रकला

मंजूषा चित्रकला अपने आप में एक सम्पूर्ण कला है। यह केवल चित्रण मात्र नहीं, बल्कि लोककथा, आस्था, प्रतीक और रंगों का ऐसा संगम है, जिसमें कला और संस्कृति का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है।

लोककथा में उल्लेख है कि बिहुला के लिए विश्वकर्मा ने लोहे की विशाल मंजूषा का निर्माण किया था और लहसन मालाकार द्वारा उस पर चित्रांकन करवाया गया। बिहुला ने स्वयं लहसन मालाकार को यह निर्देश दिया कि किस रंग से मंजूषा को सजाना है। इसी संदर्भ में यह लोकगीत गाया जाता है –

"होरे लिखवे-लिखवे रे मलिया रे मंजूषा जे लिखवे रे।
होरे पनसोखा के गुपनिहां रंग रे मलिया मंजूषा जे लिखवे रे।
होरे धरतियो धरम के त्रिगुनियाँ रंग रे मलिया मंजूषा जे लिखवे रे।"

यहाँ गुपनिहां रंग पाँच रंगों का द्योतक है –

गु : गुलाबी, प : पीला, नि : नीला, ह : हरा, न : नारंगी

वहीं त्रिगुण का भी विशेष महत्व है – तमोगुण : पीला रंग, रजोगुण : लाल अथवा गुलाबी रंग, सतोगुण : नीला रंग

इन मूल रंगों से ही शेष रंगों की उत्पत्ति मानी जाती है। नीला और पीला मिलकर हरे रंग का निर्माण करते हैं, जबकि गुलाबी और पीले के संयोग से नारंगी रंग का उभार होता है। इन्हीं पाँच रंगों का प्रयोग कर मंजूषा चित्रकला को सजाया जाता है। सामान्यतः नीले रंग से रेखांकन होता है और अन्य रंगों से चित्र को अलंकृत किया जाता है।

बॉर्डर की विशेषता

मंजूषा में प्रायः पाँच प्रकार की पारंपरिक बॉर्डर देखने को मिलती हैं। इनमें सबसे पहली है लहरिया मंजूषा, जिसकी लहरदार आकृतियाँ नदी की तरंगों का आभास कराती हैं और जीवन की सतत गति का प्रतीक होती हैं। दूसरी है बेलपत्री बॉर्डर, जो बेल-पत्तियों की तरह लहराती और जुड़ती हुई आकृतियों से बनी होती है। यह उर्वरता, हरियाली और नवजीवन का प्रतीक मानी जाती है। तीसरी है कोनिया बॉर्डर, जो छोटे-छोटे त्रिभुजाकार रूपों में बनाई जाती है। यह कोने या किनारों पर विशेष आकर्षण उत्पन्न करती है और इसे सुरक्षा तथा शक्ति का सूचक माना जाता है। चौथी है मोखा बॉर्डर, जो मेहराब जैसी संरचना लिए होती है। इसमें धार्मिक और आध्यात्मिक स्पर्श झलकता है, मानो चित्र को किसी पवित्र द्वार से घेर लिया गया हो। पाँचवीं और सबसे विशिष्ट है सर्प की लड़ी वाली बॉर्डर। इसमें साँप की तरह लहरदार आकृतियाँ खींची जाती हैं, जो मंजूषा कला के पौराणिक संदर्भ से गहराई से जुड़ी होती हैं, क्योंकि इस चित्रकला की मूल कथा विषहरी और सर्प पूजा से संबंधित है।

चित्रण की शैली और विशेष लक्षण

मंजूषा चित्रकला की शैली लोकजीवन और लोकविश्वासों से गहराई से जुड़ी हुई है। यह केवल एक कला नहीं, बल्कि भावों और प्रतीकों की ऐसी अभिव्यक्ति है, जो चित्रों के माध्यम से कथा कहने का कार्य करती है। इसी कारण इसे भावचित्रात्मक कला कहा जाता है।

इस कला का एक विशिष्ट गुण यह है कि चित्रांकन केवल एक दिशा में सीमित नहीं रहता, बल्कि कथा के प्रवाह के अनुसार बाएँ से दाहिने और दाहिने से बाएँ चलता है। इससे चित्र में गतिशीलता और निरंतरता का भाव उत्पन्न होता है।

आँखों का विशेष स्वरूप (चश्मी परंपरा)

मंजूषा चित्रकला की एक अनोखी पहचान है पात्रों की आँखें। इसमें कभी एक चश्मी (अर्थात एक ही आँख) और कभी दो चश्मी पात्रों का चित्रण किया जाता है। एक चश्मी शैली में पात्र का चेहरा प्रोफ़ाइल रूप में होता है, जबकि दो चश्मी शैली में चेहरा सामने की ओर दिखाई देता है। इस विशेषता से चित्रों में लोककला का प्रतीकात्मक और अद्वितीय सौंदर्य झलकता है।

नारी और पुरुष पात्रों का चित्रण

नारी और पुरुष पात्रों के चित्रण में भी विशिष्ट भेद देखने को मिलता है। नारी पात्रों की गर्दन अपेक्षाकृत पतली बनाई जाती है। उनकी आँखें बड़ी, गोल तथा धनुषाकार होती हैं। चेहरे पर कोमलता और लावण्य का भाव लाने के लिए इसमें भौंह और कान का चित्रण प्रायः नहीं किया जाता। उन्हें सुंदर परिधानों और आभूषणों से सजाया जाता है। उनके सिर पर आँचल के साथ पल्लू लटकता है। घाघरा, कुंचुकी और आँचल उनके परिधान के मुख्य अंग होते हैं। नथ, मांगटीका, कुंडल, चूड़ियाँ, बाजूबंद, कमरबंद, छाती पर फूलों की आकृति, कर्णफूल और अन्य आभूषण उन्हें अलंकृत करते हैं।

वहीं पुरुष पात्रों के पैरों में खड़ाऊँ (लकड़ी की जूती) दर्शाई जाती है। उनके सिर पर पगड़ी या शिखा होती है और चेहरे पर मूँछ उनकी पुरुषोचित पहचान है। पुरुष पात्रों को धोती, उपवस्त्र, कड़ा, कुंडल, माला और अन्य आभूषणों से सजाया जाता है। इस अलंकरण से पुरुष पात्रों का गौरव और सामाजिक स्थिति झलकती है।

शरीर रचना और रेखांकन

मंजूषा चित्रकला में रेखांकन की एक विशिष्ट शैली है। सामान्यतः नीले रंग से बाहरी रेखाएँ खींची जाती हैं और

उसके भीतर अन्य रंग भरे जाते हैं। रेखाएँ मोटी और स्पष्ट होती हैं, जिससे चित्र में लोककला की सहजता और ठोसपन दोनों झलकते हैं। पात्रों के शरीर का अनुपात यथार्थवादी न होकर प्रतीकात्मक होता है। यहाँ सौंदर्य की परिभाषा शास्त्रीय कला जैसी नहीं, बल्कि लोकमान्यताओं और भावों के अनुरूप है।

साहित्यिक समीक्षा

01. डॉ. अमरेंद्र की पुस्तक "अंग लोक संस्कृति और मंजूषा कला"

"अंग लोक संस्कृति और मंजूषा कला" डॉ. अमरेंद्र द्वारा रचित एक विशिष्ट शोध-ग्रंथ है, जो बिहार के अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को समग्रता से प्रस्तुत करता है। यह पुस्तक केवल एक लोककला विशेष का विवरण नहीं देती, बल्कि अंग प्रदेश की समृद्ध लोकजीवन, परंपरा, आस्था और कला संवेदना का भी गहन चित्रण करती है।

02. डॉ. दशरथ ओझा की पुस्तक "हिंदी नाटक का उद्भव और विकास"

डॉ. दशरथ ओझा की पुस्तक हिंदी नाटक का उद्भव और विकास हिंदी नाट्य साहित्य की ऐतिहासिक यात्रा और विकासक्रम का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। इसमें प्राचीन भारतीय नाट्य परंपरा—भरत के नाट्यशास्त्र और संस्कृत नाटकों से लेकर, भक्तिकाल, रीतिकाल, भारतीय नवजागरण, और आधुनिक प्रयोगशील नाटक तक की कड़ी को सुव्यवस्थित ढंग से समझाया गया है। पुस्तक में लोकनाट्य परंपराएँ (नौटंकी, स्वांग, रामलीला) और पश्चिमी रंग परंपराओं (यूनानी नाटक, शेक्सपियर) के प्रभावों को भी हिंदी नाटक के विकास से जोड़ा गया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मीनारायण मिश्र, और मोहन राकेश जैसे प्रमुख नाटककारों के योगदान का गहन विश्लेषण इस पुस्तक को हिंदी रंग साहित्य के शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी बनाता है।

03. आलोक कुमार की पुस्तक "मंशा महात्म्य"

आलोक कुमार की रचना मंशा महात्म्य लोक आस्था, सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक विश्वास का साहित्यिक रूपांतरण है। यह ग्रंथ मंशा देवी के गौरवपूर्ण चरित्र, उनकी उपासना परंपरा और लोक-विश्वास को गहनता से अभिव्यक्त करता है। इसमें पौराणिक कथा, लोकगाथा और आधुनिक दृष्टिकोण का समन्वय दिखाई देता है, जिसमें बिहुला-विषहरी जैसी लोककथाओं का भी आधारभूत संदर्भ मिलता है। धार्मिक विश्वासों के साथ लोकाचार, परंपराएँ और सामाजिक संदर्भ इस ग्रंथ के ताने-बाने में गुँथे हैं, विशेषकर पूर्वी भारत—बिहार, बंगाल और असम—के लोक-जीवन की सांस्कृतिक झलक यहाँ स्पष्ट रूप से मिलती है।

04. Angika.com (अंग क्षेत्र से जुड़ी सभी कला पर प्रकाश)

Angika.com वेबसाइट अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर और कला के विविध रूपों पर विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। वेबसाइट अंग क्षेत्र की लोक कला, शिल्प, संगीत, नृत्य, और चित्रकला जैसे विभिन्न कलाओं को संरक्षित और प्रचारित करने का सराहनीय प्रयास करती है। इसमें अंग के समर्पित कला रूपों, उनकी परंपरा और उनके समाज में महत्व को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया गया है। यह वेबसाइट अंग क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास को जीवंत बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम है।

05. दैनिक भास्कर (2020) – "अंग क्षेत्र में समुद्र मंथन पर प्रकाश"

दैनिक भास्कर (2020) में प्रकाशित लेख यह दर्शाता है कि अंग प्रदेश (भागलपुर, मुंगेर, बांका आदि) की लोक-आस्था और सांस्कृतिक परंपराओं में समुद्र मंथन कथा आज भी जीवित है। इसमें संघर्ष, संसाधन-वितरण, अमृत-लालसा और विषपान जैसे प्रतीक स्थानीय लोक-व्यवहार, अनुष्ठानों और उत्सवों में परिलक्षित होते हैं। लेख यह भी स्पष्ट करता है कि मिथकीय चेतना अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी लोक-स्मृति के माध्यम से संरक्षित है।

06. "फेमिनिज्म इन इंडिया" पेज – बिहुला-विषहरी के माध्यम से नारी सशक्तिकरण

"Feminism in India" मंच पर प्रकाशित लेख के अनुसार, बिहुला-विषहरी कथा केवल धार्मिक या लोक-गाथा नहीं, बल्कि नारी सशक्तिकरण का प्रतीकात्मक आख्यान है। इसमें नायिका बिहुला अपने मृत पति के पुनर्जीवन हेतु कठिन संघर्ष करती है, जो स्त्री की अदम्य इच्छाशक्ति और सामाजिक-दैवी बाधाओं के विरुद्ध उसके साहस को दर्शाता है। यह कथा पुरुष-प्रधान समाज में महिला की निर्णायक भूमिका को रेखांकित करती है, जहाँ स्त्री केवल सहायक नहीं, बल्कि कथा की प्रमुख संचालक शक्ति है। आधुनिक नारीवादी विमर्श में यह कथा स्त्री-केन्द्रित आख्यान और महिला की संघर्षशील पहचान के रूप में प्रासंगिक मानी जाती है।

07. Helo@manjushakala.com (बिहुला विषहरी और मंजूषा कला पर प्रकाश)

यह वेबसाइट बिहुला विषहरी की लोकगाथा और मंजूषा कला की समृद्ध परंपरा पर केंद्रित है। इसमें बिहुला विषहरी कथा का संक्षिप्त और आकर्षक विवरण दिया गया है, जिसमें लोक आस्था, सांस्कृतिक परंपरा और महिला

शक्ति के भावपूर्ण पहलुओं को दर्शाया गया है। साथ ही, मंजूषा कला के ऐतिहासिक विकास, पारंपरिक शैली और चित्रकारी के माध्यम से इस विरासत को संरक्षित करने के प्रयासों को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वेबसाइट का स्वरुप सरल, जानकारीपूर्ण और लोक संस्कृति के प्रेमियों के लिए बेहद उपयोगी है।

08. Zeenews.india.com (बिहुला कथा तथा कलश यात्रा पर प्रकाश)

Zeenews.india.com वेबसाइट पर बिहुला कथा को मिथिला और अंग प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान के रूप में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस कथा के माध्यम से नारी संघर्ष, भक्ति, और धैर्य के पहलुओं को उभारा गया है। साथ ही, वेबसाइट पर कलश यात्रा के पारंपरिक महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है, जो सामूहिक श्रद्धा, लोक एकता और धार्मिक आस्था का प्रतीक मानी जाती है।

लेखन शैली सरल, भावपूर्ण और पाठकों को विषय से जोड़ने वाली है। वेबसाइट ने साहित्यिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पक्षों का अच्छा संतुलन बनाए रखा है।

09. Utsav.gov.in (बिहुला लोक पर्व पर प्रकाश)

Utsav.gov.in वेबसाइट पर बिहुला लोक पर्व को अंग क्षेत्र की जीवंत सांस्कृतिक परंपरा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें बिहुला विषहरी कथा से जुड़े लोक आस्था, पारिवारिक समर्पण और धार्मिक अनुष्ठानों का सुंदर वर्णन किया गया है। वेबसाइट ने लोक पर्व के सामाजिक महत्व, धार्मिक विश्वास और सामूहिक लोक चेतना पर विशेष प्रकाश डाला है। भाषा सरल, तथ्यपूर्ण और लोक परंपराओं के संरक्षण को प्रोत्साहित करने वाली है।

10. Prabhatkhabar.com पर आनंद शेखर द्वारा लिखे (बिहुला कथा, इसका महत्व और लोक पर्व से जुड़ी जानकारी)

आनंद शेखर द्वारा Prabhatkhabar.com पर लिखा गया लेख बिहुला कथा की सांस्कृतिक और धार्मिक गहराई को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। लेख में बिहुला के संघर्ष, नारी शक्ति और भक्ति भावना को मार्मिक ढंग से उकेरा गया है। साथ ही, लोक पर्व के रूप में बिहुला विषहरी पूजा की परंपराओं, कलश यात्रा और सामूहिक लोक आस्था के महत्व को भी विस्तार से समझाया गया है। लेखन शैली सरल, भावनापूर्ण और पाठकों को लोक संस्कृति से जोड़ने वाली है।

11. Folkartopedia.com पर मंजूषा आर्ट की जानकारी ,साहित्यिक दृष्टि से

Folkartopedia.com पर मंजूषा कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिक महत्व और चित्रण शैली को बारीकी से प्रस्तुत किया गया है। वेबसाइट ने मंजूषा चित्रकला के मिथिला और अंग क्षेत्र से जुड़ाव, लोकगाथाओं, विशेषकर बिहुला विषहरी कथा के चित्रात्मक स्वरूप, और पारंपरिक प्रतीकों का सुंदर विश्लेषण किया है। लेखन शैली तथ्यपूर्ण, शोधपरक और लोक कलाओं के संरक्षण को प्रोत्साहित करने वाली है। यह प्रस्तुति मंजूषा कला को गहराई से समझने में पाठकों की मदद करती है।

12. Hindi.news18.com अंग क्षेत्र और बिहुला के जुड़ाव पर प्रकाश

प्रेम प्रभाकर द्वारा Hindi.news18.com पर लिखा गया लेख अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और बिहुला कथा के गहरे संबंध को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। लेख में बताया गया है कि कैसे बिहुला कथा अंग प्रदेश की लोक आस्था, सामाजिक संरचना और धार्मिक परंपराओं का अभिन्न हिस्सा है। लेखन शैली सरल, भावनापूर्ण और लोक चेतना को उजागर करने वाली है। यह लेख अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक गरिमा को समझने में पाठकों की मदद करता है।

13. Livehindustan.com (2021 में बिहुला पूजन की जानकारी पर प्रकाश)

Livehindustan.com ने 2021 में प्रकाशित जानकारी में बिहुला पूजन को लोक आस्था और पारंपरिक श्रद्धा का उत्सवपूर्ण रूप बताया है। इसमें विषहरी पूजा, कलश यात्रा और सामूहिक लोक अनुष्ठानों का विस्तृत वर्णन किया गया है। लेख में विशेष रूप से कोरोना काल के बीच हुए आयोजनों में लोगों की आस्था और सांस्कृतिक जुड़ाव को सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। भाषा सहज, सूचना-प्रधान और लोक संस्कृति के प्रति सम्मानभाव से भरी हुई है।

14. Kavitakosh.org (सम्पूर्ण बिहुला लोकगाथा पर प्रकाश)

Kavitakosh.org वेबसाइट पर सम्पूर्ण बिहुला लोकगाथा को भावनापूर्ण और पारंपरिक शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें बिहुला के संघर्ष, प्रेम, भक्ति और विषहरी पूजा से जुड़े लोक विश्वासों का विस्तृत चित्रण मिलता है। लोकगाथा की भाषा सहज, काव्यात्मक और सांस्कृतिक भावनाओं से ओत-प्रोत है। वेबसा इट ने इस अमूल्य लोकधरोहर को संरक्षित करने और नई पीढ़ी तक पहुँचाने का सराहनीय प्रयास किया है।

शोध–अंतर (Research Gap)

"अंग क्षेत्र सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और विशाल है, किंतु शोध की दृष्टि से यह अभी तक उपेक्षित रहा है। विशेषकर मुंगेर से जुड़े अध्ययनों का स्पष्ट अभाव दिखाई देता है। अब तक का अधिकांश कार्य केवल बिहुला–विषहरी लोक नाटक की सीमाओं तक ही सिमटा रहा है।"

शोध उद्देश्य (Research Objectives)

01. मुंगेर में मंजूषा चित्रकला की परंपरा और सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन करना।

02. मुंगेर क्षेत्र में मंजूषा चित्रकला की वर्तमान स्थिति, उसके संरक्षण और संवर्धन की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करना।

03. इस लोककला से जुड़े लोक चित्रकारों की सामाजिक-आर्थिक दशा, उनकी चुनौतियाँ एवं अवसरों का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति (Research Methodology)

इस शोध कार्य में गुणात्मक (Qualitative) पद्धति का उपयोग किया गया है। गुणात्मक पद्धति इस कारण उपयुक्त है क्योंकि इसका उद्देश्य आंकड़ों की गणना मात्र नहीं, बल्कि लोककला, कलाकार और समाज के बीच के सांस्कृतिक संबंधों को समझना है। इस प्रक्रिया में मुख्य रूप से स्थानीय लोक चित्रकारों, कारीगरों तथा कला-प्रेमियों के साथ खुली बातचीत (Open-ended Interviews) की गई, ताकि उनकी जीवन स्थितियों, कला के प्रति दृष्टिकोण तथा समकालीन चुनौतियों को गहराई से जाना जा सके।

इसके साथ ही शोधार्थी ने मेले एवं उत्सवों का प्रत्यक्ष अवलोकन (Observation Method) किया, जहाँ मंजूषा चित्रकला का प्रदर्शन एवं बिक्री होती है। इन अवसरों पर न केवल चित्रकला के पारंपरिक स्वरूप को देखा गया, बल्कि यह भी समझा गया कि वर्तमान समय में कला किस प्रकार बाज़ार, लोक-विश्वास और सांस्कृतिक मांग के अनुरूप अपना रूप बदल रही है।

नमूना संग्रह

इस शोध में प्राथमिक स्रोत के रूप में मुंगेर एवं भागलपुर जिले के मंजूषा चित्रकला से जुड़े लोक कलाकारों का चयन किया गया है। इन कलाकारों से प्रत्यक्ष संवाद, साक्षात्कार तथा चर्चा के माध्यम से जानकारी एकत्रित की जाएगी।

निष्कर्ष (Conclusion)

मुंगेर क्षेत्र में मंजूषा चित्रकला का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह केवल एक कला नहीं, बल्कि लोक आस्था, परंपरा और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है। यहाँ के लोग आज भी इस चित्रकला को धार्मिक अनुष्ठानों, विशेषकर मुंडन संस्कार और लोक पूजन से गहराई से जोड़ते हैं। बिहुला–विषहरी लोककथा के साथ इसका संबंध इसे और भी पवित्र एवं लोकजीवन से आत्मीय रूप से जुड़ा बनाता है।

वर्तमान स्थिति बताती है कि मंजूषा चित्रकला का दायरा अब धीरे-धीरे सिमटता जा रहा है। यह मुख्यतः लोक पर्व तक ही सीमित रह गई है और इसके प्रयोग या नवाचार इस क्षेत्र में नगण्य हैं। प्रशिक्षित कलाकारों की संख्या बेहद कम है, और जो कलाकार आज इस परंपरा को जीवित रखे हुए हैं, वे अधिकतर अपने पूर्वजों से सीखी परंपरागत शैली पर ही निर्भर हैं। इससे इसके संवर्धन और व्यापक प्रसार में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं।

मंजूषा चित्रकला से जुड़े लोक चित्रकारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति चिंताजनक है। अधिकांश कलाकारों को स्थायी आजीविका इस कला से प्राप्त नहीं हो पाती, जिसके कारण उनका पलायन अन्य व्यवसायों की ओर हो रहा है। ये कलाकार मुख्यतः लोक पर्व के समय ही चित्र निर्माण करते हैं, जबकि वर्ष के शेष समय उन्हें दूसरे कार्यों पर निर्भर रहना पड़ता है।

सुझाव (Suggestions)

कला अभियान का आयोजन – मुंगेर और भागलपुर क्षेत्र के लोक कलाकारों तथा समुदाय के लोगों के बीच मंजूषा चित्रकला के प्रचार-प्रसार हेतु नियमित कला अभियानों और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे नई पीढ़ी इस परंपरा से जुड़ सकेगी। दस्तावेजीकरण (Documentation) की आवश्यकता – लोक कलाकारों, उनकी शैलियों, अनुभवों और सृजनात्मक विधियों का साक्षात्कार, वीडियो, ऑडियो एवं लिखित रूप में दस्तावेजीकरण अनिवार्य है। यह न केवल वर्तमान शोधार्थियों के लिए आधार बनेगा, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को भी मंजूषा कला के अध्ययन और संरक्षण हेतु प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध कराएगा।

संदर्भ सूची

Amrendra. The first season, samiksha prakashan, 2018/Amrendra, The first season, Samiksha Prakashan, 2012/

Ojha D, The first season, Rajpal Prakashan, 2012./

Kumar A, The first season, Hema devi Prakashan, 2021./

Angika.com. (2025). Ang, Anga, Angdesh History. Retrieved from https://www.angika.com/p/history-of-ang-anga-angdesh.html

Bhaskar D,https://www.bhaskar.com/news/TRA-samudra-manthan-mandar-parvat-in-bihar-news-hindi5494126-PHO.htm/

Anand A, https://feminisminindia.com/2022/07/15/how-do-folklore-inculcateprotests-a-case-study-of-angika-folk-culture/, Jul 2022, feminisminindia.com/

Manjusha Kala. (n.d.). मंजूषा कला – अंग प्रदेश की धरोहर. Retrieved August14,2025,fromhttps://www.manjushakala.in/ (Contact:hello@manjushakala.in)

BrandsofBihar.com. (2025). Bihula-Bisahari: The Tale of Devotion and the Legacy of Manjusha Art. Retrieved from [https://www.brandsofbihar.com/bihulabishari-the-tale-of-devotion-and-the-legacy-of-manjusha-art])

Zee News Hindi. (n.d.). बिहुला विषहरी की कथा और महत्व. Retrieved from [https://zeenews.india.com/hindi/india/bihar-jharkhand/patna/know-the-full-story-of-bihula-vishhari-what-is-the-importance-of-bari-kalash/1307472]

Utsav.gov.in. (n.d.). Bihula Festival. Retrieved from [https://utsav.gov.in/view-event/bihula-festival]

Prabhat Khabar. (2025). बिहुला विषहरी पूजा की कथा. Retrieved from [https://www.prabhatkhabar.com/state/bihar/bihula-vishari-puja-started-with-devotion-know-its-story-axs]

Folkartopedia. (n.d.). Bihula-Bisahari: Folklore of Anga Region. Retrieved from [https://www.folkartopedia.com/oral-traditions/folklores/folklore-angika-bihula-bisahari-bhagalpur-sk/]

LiveHindustan.com. (2019, August 17). मां विषहरी पूजा: बिहुला विषहरी की गाथा का साक्षी है अंग का इतिहास. Retrieved from [https://www.livehindustan.com/bihar/bhagalpur/story-history-of-angh-mother-vishahari-worship-and-bihula-is-a-witness-of-vishahari-worship-2693163.html]

LiveHindustan.com. (2021, August 13). बिहुला विषहरी पूजा 17 को, तैयारी में जुटे श्रद्धालु. Retrieved from [https://www.livehindustan.com/bihar/katihar/story-bihula-vishhari-puja-on-17th-devotees-engaged-in-preparation-4348272.html]

कविता कोश. (n.d.). बिहुला कथा / अंगिका लोकगाथा. Retrieved from https://share.google/edzE8xs011xFfhHRt (link will open only in mobile)